International Journal of Multidisciplinary Education and Research
ISSN: 2455-4588
www.newresearchjournal.com/multieducation
Volume 1; Issue 1; March 2016; Page No. 20-22

रीवा जिले के गंगेव विकासखण्ड में माध्यमिक स्तर पर कार्यरत विज्ञान वर्ग के पुरूष एवं महिला शिक्षकों की शिक्षण अधिगम क्षमता का तुलनात्मक अध्ययन

डॉ. (श्रीमती) रंजना तिवारी

विभागाध्यक्ष (शिक्षा) – श्रीयुत्त स्नातकोत्तर महाविद्यालय, गंगेव जिला रीवा, म.प्र.

सारांश
प्रस्तुत शोध पत्र रीवा जिले के गंगेव विकासखण्ड में माध्यमिक स्तर पर कार्यरत विज्ञान वर्ग के पुरूष एवं महिला शिक्षकों की शिक्षण अधिगम क्षमता का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। समाज में किसी भी विषय के ज्ञान को लेकर लिंगभेद पर विचार किया जाता है तथा पुरूष व स्त्री में श्रेष्ठ कौन है, पर प्रश्न उठता है। विश्वभर में समकालीन अनुभव यह सिद्ध करते हैं कि शिक्षा और विकास के बीच गहरा सम्बन्ध है, विशेषकर विकासशील देश में क्योंकि शिक्षा मानव संसाधन विकास का अनिवार्य अंग है। महिलाओं की भूमिका को हम विकास में अनदेखा नहीं कर सकते।

प्रयुक्त शब्द : रीवा, गंगेव विकासखण्ड, माध्यमिक स्तर, विज्ञान एवं शिक्षण अधिगम क्षमता

प्रस्तावना
वर्तमान समाज में प्रत्येक विषय के साथ विज्ञान शब्द जोड़ना फैषन सा बन गया है। जैसे राजनीति विज्ञान, समाज विज्ञान, मनोविज्ञान आदि। विज्ञान का सामान्य अर्थ किसी वस्तु का क्रमबद्ध ज्ञान प्राप्त करना है। कारण और परिणाम के बीच सामंजस्य स्थापित करना ही विज्ञान का उद्देष्य है। यह सृष्टि का क्रमबद्ध ज्ञान है जो मनुष्य को भौतिक सृष्टि के प्रति व्यवस्थित ज्ञान प्रदान करता है। विज्ञान सृष्टि के छिपे हुए तथ्यों को अनवरत अन्वेषण करता हुआ उसके परिणामों को संचित करता है। विज्ञान व्यवस्थित ज्ञान का वह संचित कोश है जो मनुष्य को भौतिक सृष्टि के प्रति व्यवस्थित ज्ञान प्रदान करता है। विज्ञान सृष्टि के छिपे हुए तथ्यों को अनवरत अन्वेषण करता हुआ उसके परिणामों को संचित करता है। विज्ञान व्यवस्थित ज्ञान का वह संचित कोष है जो मनुष्य को उसके चारों ओर फैले सृष्टि की प्रकृति के बारे में बतलाता है।

सुशील दयाल के अनुसार – ''विज्ञान वह क्रमबद्ध ज्ञान है जो सूक्ष्म निरीक्षण उसके विष्लेषण और समान प्रयोगों के माध्यम से प्राप्त होता है और जो प्रकृति में चलने वाले विभिन्न प्रक्रियाओं और घटनाओं के 'कैसे' और 'क्यों' पक्ष की व्याख्या करता है।"

पं. श्री दत्त त्रिपाठी के अनुसार–''जीवन में अनेक प्रकार के उतार चढ़ाव आते हैं इन सभी का ज्ञान शिक्षा के माध्यम से ही सम्भव है।'' शिक्षा जीवन के हर पल सतत् चलने वली एक प्रक्रिया है। मानव हर क्षण, हर पल जो कुछ भी सीखता है यह सब कुछ शिक्षा की कोटि में आता है। अभिमन्यु ने गर्भ में ही अस्त्र शस्त्र की शिक्षा ग्रहण कर ली थी। नवीन अनुभव शिक्षा में सहायक होते हैं। परन्तु सर्वविदित है कि शिक्षक के बिना शिक्षा अधूरी है। व्युत्पत्ति की दृष्टि से शिक्षक शक से बना हुआ शब्द है मूल अर्थ है सकने की इच्छा अर्थात् समर्थ होने का संकल्प। इस दृष्टि से शिक्षा सम्पूर्ण जीवन के साथ सामंजस्य बनाने का संकल्प है।

प्लेटो के अनुसार– ''शिक्षा से मेरा अभिप्राय उस प्रशिक्षण से है जो अच्छी आदतों द्वारा बच्चों में नैतिकता का विकास करती है। परन्तु एक बालक का सर्वांगीण विकास तभी संभव है जब वह एक योग्य शिक्षक से शिक्षा प्राप्त करें।

विज्ञान जनषक्ति संस्थान अमेरिका ने विज्ञान की समग्र परिभाषा देने की कोषिष की है, जिसके अनुसार ''विज्ञान प्रायोगिक प्रेक्षण का वह संचित और अनवरत क्रम है जो ऐसी धारणाओं और सिद्धांतों को जन्म देता है, जो आगामी प्रेक्षणों को प्रकाष एवं दिषानिर्देष प्रदान करता है। इसमें पुरातन मान्यताएँ अनवरत संषोधित होती जाती है इस प्रकार विज्ञान मान्यताओं के परिवर्तन और संषोधन की प्रक्रिया भी है। विज्ञान के सिद्धांत, सार्वभौमिक और सार्वकालिक नहीं होते हैं। ज्ञान की प्रगति और अन्वेशणों के आधार पर जो सिद्धांत आज सही माने जा रहे हैं, वह कल मिथ्या भी सिद्ध हो सकते हैं। इसमें मानवीय पूर्वाग्रहों का कोई स्थान नहीं है।

सर्वविदित है कि शिक्षक के रूप में पुरूषों के साथ–साथ महिलाओं ने भी अध्यापन व्यवसाय में सम्मानजनक स्थान प्राप्त किया है। भारतीय संविधान ने भी नारी को समकक्षता प्रदान करते हुए घोषित किया– ''राज्य किसी नागरिक के विरूद्ध केवल धर्म, जाति, लिंग, जन्म, स्थान या इनमें किसी के आधार पर कोई विभेद नही करेगा।'' यदि पुरूष या महिला शिक्षण व्यवसाय के लिए चुने जाते हैं तो उनका चयन उनकी शिक्षण योग्यता एवं उनकी शिक्षण अभिक्षमता पर किया जाए न कि लिंग, जाति, वर्ग या विषयों के आधार पर। अतः यह शोध विज्ञान वर्ग के पुरूष एवं महिला शिक्षकों की शिक्षण अभिक्षमता को जानने का प्रयास करता है।

शोध का आवश्यकता एवं महत्व
वैदिक काल से ही यह सार्वभौमिक सत्य और सिद्धान्त प्रचलित है कि स्त्री पृथ्वी पर नैतिकता, मानवता और सभ्यता के विकास का अपरिभित स्त्रोत रही है। स्त्री देश की संस्कृति, धर्म साहित्य, कला एवं ज्ञान विज्ञान का स्तम्भ होती है। शिक्षित स्त्री पुरूष से किसी भी कार्य क्षेत्र में पीछे नहीं है। चिकित्सक, शिक्षक, इंजीनियर, समाजसेवी, अधिवक्ता या अन्य कोई भी क्षेत्र हो स्त्रियों का योगदान पुरूषों के समान ही है। परन्तु फिर भी विज्ञान के क्षेत्र में समाज वर्तमान समय में भी स्त्रियों को पुरूषों से कम आंक कर उसके कार्यों पर प्रश्नचिन्ह लगाता है। भूतपूर्व प्रधानमंत्री श्री मति इन्दिरा गाँधी ने कहा था कि– ''किसी भी समाज का स्तर वहां की

महिलाओं के स्तर से आंका जाता है। महिलाएँ आज भी पुरूष प्रधान समाज में रह रही हैं। उन्हें जन्म से लेकर जीवनपर्यन्त हर क्षेत्र में इस मानसिकता से गुजरना पड़ता है चाहे वह शिक्षा का क्षेत्र हो अथवा समाज में रहने की बात।''

भारतवर्ष में महिलाओं के स्तर पर राज्य सभा में दिनांक 18 मई 1975 में हुई बहस के अंश शिक्षा के आधुनिकिकरण होने के साथ ही विज्ञान समूह के पुरूष एवं महिला शिक्षकों के मध्य भी महिला शिक्षकों की अभिक्षमता पर प्रश्न उठाए गए। यह परिस्थितियाँ विज्ञान वर्ग की महिला शिक्षकों के आत्मसम्मान को ठेस पहुंचाती है। जिससे उनकी मानसिक दशा व कार्यक्षमता पर सीधा प्रभाव पड़ता है। शोधार्थी का मुख्य उद्देश्य रीवा जिले के शासकीय माध्यमिक शिक्षा स्तर पर कार्यरत विज्ञान वर्ग के पुरूष एवं महिला शिक्षकों की शिक्षण अभिक्षमता को जान कर उसमें उत्पन्न समस्याओं को ज्ञात कर उनके निशकरण हेतु सुझाव प्रस्तुत करना है।

उद्देश्य– शासकीय माध्यमिक स्तर के विज्ञान वर्ग पुरूष एवं महिला शिक्षकों की शिक्षण अभिक्षमता का आंकलन करना।

परिकल्पना– गंगेव विकासखण्ड में माध्यमिक स्तर में विज्ञान वर्ग के पुरूष तथा महिला शिक्षकों की शिक्षण अभिक्षमता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

परिसीमाँकन– शोध हेतु रीवा जिले के गंगेव विकासखण्ड की राजस्व सीमा के माध्यमिक शिक्षा स्तर के 20 विद्यालयों के 20–20 शिक्षकों का चयन दैव निदर्शन विधि से किया गया।

शोध विधि

शोधार्थी द्वारा प्रस्तुत शोध अध्ययन के विधिवत सम्पादन के लिए निम्न शोध विधियों का चयन किया गया है–

सर्वेक्षण अध्ययन विधि– सर्वेक्षण अनुसंधान का एक महत्वपूर्ण अंग है। इसके द्वारा शोध समस्या के विभिन्न पक्षों से सम्बन्धित आंकड़ों का संग्रहण किया जाता है। आंकड़े मुख्य तथा वर्तमान स्तर का निर्धारण, वर्तमान स्तर की मान्य स्तर से तुलना, तथा वर्तमान स्तर को विकसित करने में महत्वपूर्ण उपादान होते हैं। सर्वेक्षण में व्यक्ति की अपेक्षा तथ्यों, परिस्थितियों तथा गणनाओं को प्राथमिकता दी जाती है।

साक्षात्कार विधि– शैक्षिक अनुसंधान में साक्षात्कार विधि का प्रयोग सर्वाधिक किया जाता है। इस विधि के द्वारा गुणात्मक एवं संख्यात्मक दोनो प्रकार की जानकारियाँ प्राप्त की जा सकती हैं। इस अनुसंधान में भी शोधार्थी ने साक्षात्कार विधि का प्रयोग किया है।

साख्यिकीय विधि– सर्वेक्षण तथा साक्षात्कार विधि से प्राप्त ऑकड़ो का वर्गीकरण एवं सारणीयन किया गया है। जिनकी व्याख्या एवं विष्लेषण हेतु, सांख्यकीय विधियॉ प्रयोग में लाई गयी है। प्रस्तुत शोधकार्य में परिकल्पनाओं का परीक्षण सांख्यकीय विधियों द्वारा करने के लिये– Mean, प्रतिषत (%), S.D., Chisquare test, 'T' Test आदि प्रयोग किये गये है, साथ ही गुणात्मक विष्लेषण पर भी ध्यान रखा गया हैं।

शोध उपकरण

प्रस्तुत शोध कार्य हेतु माध्यमिक शिक्षा स्तर पर कार्यरत शिक्षकों को शिक्षण अधिगमक्षमता के परीक्षण हेतु डॉ. आर.पी.सिंह एवं डॉ. एस. एन.शर्मा द्वारा निर्मित अध्यापक अभिक्षमता परीक्षण माला का प्रयोग किया गया है।

पूर्व अध्ययन समीक्षा

पूर्ववर्ती अध्ययन से तात्पर्य अनुसंधान की समस्या से सबन्धित उन सभी प्रकार की पुस्तकों, ज्ञान कोशों, पत्र–पत्रिकाओं, शोध पत्रों तथा अभिलेखों आदि से है, जिनके अध्ययन से अनुसंधानकर्ता को अपनी समस्या के चयन, परिकल्पनाओं के निमार्ण, अध्ययन की रूपरेखा तैयार करने तथा कार्य को आगे बढ़ाने में सहायता मिलती है इनमें से मुख्य रूप से मदान, पूनम (2003)[1], नन्दिनी (2005)[2], पाठक (2007)[3], कौल (1988)[4], ने सम्बन्धित कार्य किये है,

शोध क्षेत्र का परिचय

भारतवर्ष की हृदयस्थली मध्यप्रदेश के रीवा पठार के मध्यवर्ती भाग में स्थित विकासखण्ड गंगेव $24^0 36'$ से $24^0 54'$ उत्तरी अक्षांश तथा $81^0 15'$ पूर्वी देशान्तर से $81^0 40'$ पूर्वी देशान्तर के मध्य स्थित है। यह विकासखण्ड रीवा जिले के मध्यवर्ती भाग में कुल भौगोलिक क्षेत्रफल 591.3 वर्ग कि.मी. तक फैला है। विकासखण्ड के उत्तरी सीमा पर त्योंथर तहसील, पूर्व में नईगढ़ी, दक्षिण में रायपुर कर्चुलियान तथा पश्चिम में सिरमौर विकासखण्ड स्थित है। विकासखण्ड गंगेव की पूर्व से पश्चिम लम्बाई कम तथा दक्षिण से उत्तर की लंबाई अधिक है। विकासखण्ड अनियमित आकृति वाला क्षेत्र है, यह समुद्र तल से 715 मीटर की ऊँचाई पर स्थित है।[5]

परिणामों का विश्लेषण एवं व्याख्या

शोधार्थी द्वारा किया गया कोई भी शोध कार्य सही अर्थों में तभी प्रतिबिम्बित होता है, जब शोधार्थी द्वारा उस समस्या की वास्तविक स्थिति का मूल्यांकन किया जाय। इसके लिये यह आवश्यक है, कि शोधार्थी द्वारा शोध अध्ययन में उपयोग किये गये समस्त शोध उपकरणों द्वारा प्राप्त जानकारियों को व्यवस्थित क्रम में सारणीबद्ध किया जाय, जो निम्नानुसार है–

सारणी क्रमांक 1: विज्ञान वर्ग के महिला एवं पुरूष शिक्षकों की शिक्षण अधिगम क्षमता का सांख्यिकीय विश्लेषण

क्र.	शिक्षक	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी मान	परिणाम
01	पुरूष	20	54.4	16.54	–0.	सार्थक अन्तर
02	महिला	20	58.6	13.89	87	नहीं है

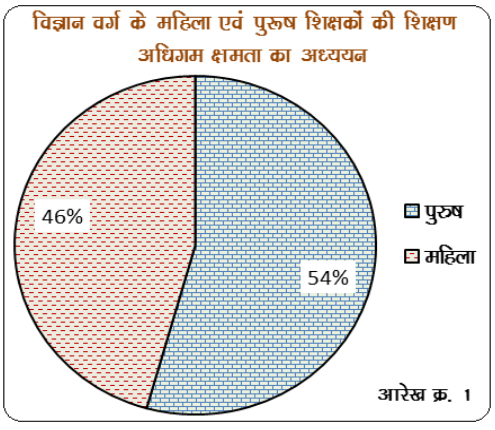

निष्कर्ष

उपरोक्त सारणी से यह स्पष्ट होता है कि 38 क ि के लिए टी मान तालिका मान 0.05 विश्वास स्तर पर 2.03 है तथा 0.01 विश्वास स्तर पर 2.72 है, जबकि टी का गणना द्वारा प्राप्त मान –0.87 है। अतः गणना द्वारा प्राप्त मान कम है। इस प्रकार यह निष्कर्ष

निकलता है कि विज्ञान वर्ग के पुरूष तथा महिला शिक्षकों की शिक्षण अभिक्षमता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

सुझाव

- माध्यमिक शिक्षा स्तर पर कार्यरत शिक्षकों हेतु विज्ञान की शिक्षण विधियों में सुधार तथा नवीन शिक्षण विधियों के विकास को बढ़ावा दिया जाए।
- माध्यमिक शिक्षा स्तर के प्रत्येक विद्यालयों में विज्ञान प्रयोगशालाएँ स्थापित कर उन्हें नयी–नयी सामग्री से सुसज्जित किया जाए।
- प्रयोगशाला स्थापना के पश्चात् पुरूष एवं महिला शिक्षकों को प्रशिक्षण अवश्य दिया जाए।

सन्दर्भ

1. मदान पूनम (2013) उद्दीयमान भारतीय समाज में शिक्षक अग्रवाल पब्लिकेशन्स आगरा।
2. नन्दिनी दुर्गेश (2005) शिक्षा दर्शन सुमित इन्टरप्राइजेज नही दिल्ली।
3. पाठक पी.डी. (2007) भारतीय शिक्षा और उसकी समस्याएँ विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।
4. कौल, लोकेष (1998) : शैक्षिक अनुसंधान की कार्य प्रणाली, विकास पब्लिसिंग हाउस प्रा.लि. नई दिल्ली.
5. अग्निहोत्री, गुरू रामप्यारे (1990), रीवा राज्य का इतिहास, हिन्दी ग्रंथ अकादमी, म.प्र. भोपाल.